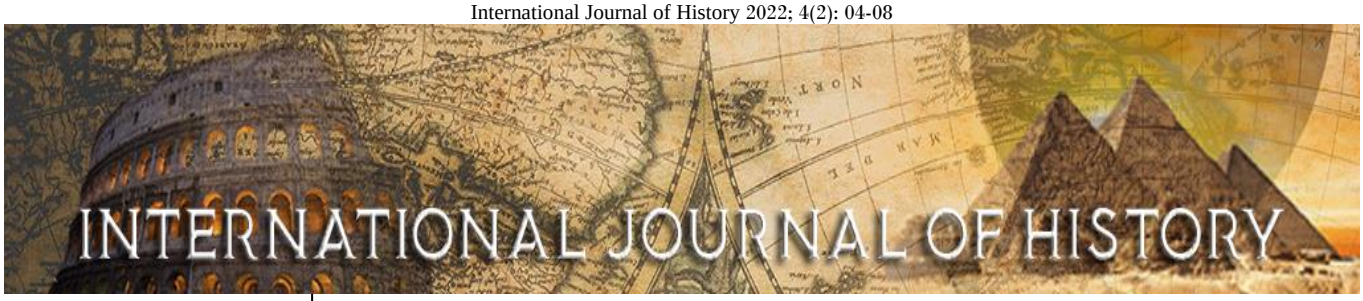

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2022; 4(2): 04-08
Received: 07-04-2022
Accepted: 11-05-2022

अविनाश आर्य
बाबा मस्तनाथ विश्विद्यालय,
रोहतक, हरियाणा, दिल्ली, भारत

रचना ग्रोवर
बाबा मस्तनाथ विश्विद्यालय,
रोहतक, हरियाणा, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
अविनाश आर्य
बाबा मस्तनाथ विश्विद्यालय,
रोहतक, हरियाणा, दिल्ली, भारत

सामाजिक बदलाव में शिक्षा की भूमिका

अविनाश आर्य, रचना ग्रोवर

सारांश
शिक्षा सामाजिक परिवर्तन और विकास का एक माध्यम है जो स्वयं विकास प्रक्रिया में एक आवश्यक उत्पादक सामग्री का गठन करती है, जिसे आधुनिक समाज में व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है। सामाजिक परिवर्तन तब हो सकता है जब मनुष्य को परिवर्तन की आवश्यकता हो। कोई भी समाज शिक्षा के माध्यम से ही वांछित परिवर्तन ला सकता है और प्रौद्योगिकी के तेजी से विकास का सामना कर सकता है। इसने सामाजिक-आर्थिक प्रगति हासिल करने, आय वितरण में सुधार, रोजगार के नए अवसर पैदा करके गरीबी उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है; यह वर्ग भेदभाव, लिंग पूर्वाग्रह को भी दूर करता है और समानता और न्याय को बढ़ावा देता है। निस्संदेह शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में एक बहुत ही महत्वपूर्ण संपार्श्विक कारक हो सकती है। यह ग्रह के बदलते सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर ज्ञान, जागरूकता, सूचना, कौशल और मूल्यों का प्रसार करके उस प्रक्रिया को तेज करने और काम करने में मदद कर सकता है। इस प्रकार शिक्षा सामाजिक विकास और सुधार की मूल पद्धति है, जो व्यक्ति की स्वयं और दुनिया की समझ को समृद्ध करती है। मनुष्य के जीवन के हर पहलू में शिक्षा के माध्यम से एक अभूतपूर्व परिवर्तन देखा गया है। शिक्षा ने समाज की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए युवा पीढ़ी के समाजीकरण के एजेंट के रूप में कार्य किया है। यह बच्चे को नए मूल्यों की ओर भी निर्देशित करता है और बुद्धि के विकास में सहायता करता है और समाज के स्वयं के परिवर्तन की क्षमता को बढ़ाता है।

कूट शब्द: सामाजिक बदलाव, शिक्षा की भूमिका, शिक्षा सामाजिक परिवर्तन

भूमिका
शिक्षा का उपयोग व्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए एक उपकरण के रूप में किया जा सकता है। समाज में होने वाले परिवर्तन के विश्लेषण में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जैसे कि यह लोगों को परिवर्तन की प्रकृति और रूप के बारे में ज्ञान प्रदान करता है, परिणामस्वरूप समाज परिवर्तन के अनुकूलन के बारे में निर्णय ले सकता है। शिक्षा एक ऐसा मजबूत हथियार है जो व्यक्ति और समुदाय दोनों में बड़े पैमाने पर सामाजिक परिवर्तन लाता है। यह व्यक्तियों के दृष्टिकोण, महत्वाकांक्षाओं और दृष्टिकोण को काफी हद तक अद्यतन करता है और जाति व्यवस्था, अस्पृश्यता, दहेज प्रथा और कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक समस्याओं के उन्मूलन में मदद करता है, लोगों को जन जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षित करके समाज से मिटा दिया जाता है। शिक्षा ने पुरुषों के जीवन के हर पहलू में अभूतपूर्व परिवर्तन लाए हैं। फ्रांसिस जे. ब्राउन के अनुसार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज के व्यवहार में परिवर्तन लाती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो प्रत्येक व्यक्ति को समाज की गतिविधियों में प्रभावी रूप से भाग लेने और समाज की प्रगति में सकारात्मक योगदान देने में सक्षम बनाती है।

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका

सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक विकास के एक एजेंट या उपकरण के रूप में शिक्षा की भूमिका को व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है; यह राष्ट्र के विकास का एक प्रमुख घटक है। इसे सामाजिक परिवर्तन के लिए एक वाहक के रूप में देखा जाता है, लेकिन इसे मुख्य रूप से एक संरक्षण भूमिका आवंटित की जाती है क्योंकि इसका मुख्य कार्य युवाओं के समाजीकरण और सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखना है। तीव्र सामाजिक परिवर्तन के समय में राज्य की सेवाओं में शिक्षा की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। सामाजिक परिवर्तन सामाजिक और आर्थिक वातावरण में होने वाले कई प्रकार के परिवर्तनों की प्रतिक्रिया के रूप में होते हैं।

शिक्षा का उपयोग व्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए एक उपकरण के रूप में किया जा सकता है। बाल केंद्रित शिक्षा के माध्यम से, छात्र परिवर्तन में अपनी भूमिका देखने में सक्षम होते हैं। सामाजिक परिवर्तन उस समाज के भीतर व्यक्तियों के सामूहिक परिवर्तन से आता है। आज यह धर्मनिरपेक्ष हो गया है। यह अब एक स्वतंत्र संस्था है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास का मार्ग तैयार करने में शिक्षा का प्रमुख योगदान रहा है। शिक्षा ने पुरुषों के जीवन के हर पहलू में अभूतपूर्व परिवर्तन लाए हैं। फ्रांसिस जे. ब्राउन के अनुसार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज के व्यवहार में परिवर्तन लाती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावी ढंग से सक्षम बनाती है समाज की गतिविधियों में भाग लेना और समाज की प्रगति में सकारात्मक योगदान देना है। सामाजिक परिवर्तन उस समाज में व्यक्तियों की संयुक्त बदलती जरूरतों से आता है। दुनिया के सभी राष्ट्र किसी न किसी रूप में शैक्षिक प्रणाली से लैस हैं, हालांकि ये प्रणालियां काफी भिन्न हैं।

युवाओं का समाजीकरण और उचित सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना शिक्षा के मुख्य कार्यों में से एक है। यह न केवल समाज में सामाजिक परिवर्तन लाने के साधन के रूप में कार्य करता है बल्कि समाज में इस तरह के बदलाव की दर को बढ़ाने और बढ़ाने के लिए भी कार्य करता है। शिक्षा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास का रास्ता तैयार करने में सक्रिय भूमिका निभा रही है। शिक्षा संस्कृति को संरक्षित करती है और उन तथ्यों का रिकॉर्ड रखती है जिनका उपयोग आने वाली पीढ़ियों द्वारा किया जाएगा। यह उन्हें सोचने, बेहतर निर्णय लेने और अपने दृष्टिकोण में नवीन बनने में भी सक्षम बनाता है। यह समय-समय पर विभिन्न सामाजिक परिवर्तनों के कारणों और प्रभावों के बारे में जनता के बीच जागरूकता पैदा करता है।

सामाजिक परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा

विभिन्न शिक्षाविदों और दार्शनिकों ने शिक्षा को विकास की एक प्रक्रिया के रूप में देखा है, जिसमें शिक्षा के साधन कई गुना हैं। इसमें बच्चे के सर्वांगीण या समग्र विकास को शामिल किया गया है और इसमें अध्ययन के एक स्वतंत्र क्षेत्र के रूप में शिक्षक शिक्षा भी शामिल है। इसके अलावा इसका सामाजिक परिवर्तन और नियंत्रण का एक उपकरण होने का मौलिक आर्थिक मूल्य है। शिक्षा समाज की नींव और उसका निर्माता दोनों है। शिक्षा न केवल वर्तमान समय में प्रासंगिक है बल्कि यह भविष्य की तैयारी का साधन भी है।

फ्रांसिस जे. ब्राउन के अनुसार "शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज के व्यवहार में परिवर्तन लाती है।" यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो प्रत्येक व्यक्ति को समाज की गतिविधियों में प्रभावी रूप से भाग लेने और समाज की प्रगति में सकारात्मक योगदान देने में सक्षम बनाती है।

एक फ्रांसीसी समाजशास्त्री डेविड एमिल दुर्खीम ने शिक्षा की कल्पना की "शिक्षा युवा पीढ़ी का समाजीकरण है।" वह आगे कहते हैं कि "सभी शिक्षा बच्चे पर देखने, महसूस करने और अभिनय करने के तरीकों को थोपने का एक निरंतर प्रयास है, जिसे वह सहज रूप से नहीं पहुंचा सकता था।"

दुर्खीम (1950) ने समझाया कि "यह समग्र रूप से समाज और प्रत्येक विशेष सामाजिक परिवेश है जो उस आदर्श को निर्धारित करता है जिसे शिक्षा प्राप्त करती है। समाज तभी जीवित रह सकता है जब उसके सदस्यों में पर्याप्त मात्रा में एकरूपता हो; शिक्षा शुरू से ही बच्चे में, सामूहिक जीवन की मांग वाली आवश्यक समानताएं तय करके इस एकरूपता को कायम रखती है और मजबूत करती है। लेकिन दूसरी ओर, निश्चित विविधता के बिना सभी सहयोग असंभव होंगे; शिक्षा स्वयं विविध और विशिष्ट होने के कारण इस आवश्यक विविधता की दृढ़ता को मानती है"।

सैमुअल कोएनिग ने वर्णन किया है कि "शिक्षा को उस प्रक्रिया के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है जिसके द्वारा एक समूह की सामाजिक विरासत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है और साथ ही वह प्रक्रिया जिससे बच्चा सामाजिक हो जाता है, अर्थात समूह के व्यवहार के नियमों को सीखता है जिसमें वह पैदा हुआ है।" स्विफ्ट (1969) ने शिक्षा को "एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में माना है जिसके द्वारा व्यक्ति उस समूह द्वारा मांग

की गई कई शारीरिक, नैतिक सामाजिक क्षमताएं प्राप्त करता है जिसमें वह पैदा होता है और जिसके भीतर उसे कार्य करना चाहिए"।

सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में शिक्षा का कार्य

सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में शिक्षा के कुछ महत्वपूर्ण कार्यों की रूपरेखा इस प्रकार है :-

1. परिवर्तन की इच्छा पैदा करना

शिक्षा जीवन के आधुनिक तरीकों के पक्ष में लोगों के दृष्टिकोण को बदलने में मदद करती है और उन दृष्टिकोणों का निर्माण करती है जो पूर्वाग्रहों, अंधविश्वासों और पारंपरिक मान्यताओं से लड़ सकते हैं। यह बढ़ते पारंपरिक मूल्यों और धर्म और धर्मनिरपेक्षता के प्रति जाति और वर्ग की सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं के संबंध में छोटे परिवारों के पक्ष में दृष्टिकोण में बदलाव ला सकता है। शिक्षा सामाजिक विकास की प्रक्रियाओं के साथ-साथ कार्य करती है, जो सामाजिक परिवर्तन के अन्य रूप हैं।

शिक्षा समाज में बदलाव की इच्छा पैदा करती है, जो आने वाले किसी भी तरह के बदलाव के लिए एक पूर्वापेक्षा है। यह वंचितों, दलितों और पिछड़े लोगों को उनकी स्थिति से अवगत कराता है और उनकी स्थिति में सुधार करने की इच्छा को स्थापित करता है। शिक्षा हमारे सामाजिक ढांचे में कमजोरियों, सामाजिक अंतरालों, ज्ञान के अंतरालों की पहचान करने और जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रगति प्राप्त करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में बहुत मददगार हो सकती है।

2. सामाजिक परिवर्तन को अपनाना :-

जब भी कोई सामाजिक परिवर्तन होता है तो उसे अक्सर दूसरों द्वारा अपनाया जाता है, जबकि अन्य को इस परिवर्तन के साथ तालमेल बिठाना बहुत मुश्किल होता है। शिक्षा लोगों को उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन अपनाने में सहायता करने का कार्य करती है। लोग किसी भी सामाजिक परिवर्तन को तब तक स्वीकार और स्वीकार करेंगे जब तक कि वे इसके लाभ और वांछनीयता के प्रति आश्वस्त नहीं हो जाते। शिक्षा लोगों को अंध विश्वास और पूर्वाग्रहों को दूर करने और नए विचारों को स्वीकार करने में मदद करती है। यह उन मूल्यों को स्थापित करने में मदद करता है जो सामाजिक परिवर्तन के विश्लेषण के लिए एक शर्त के रूप में कार्य करते हैं।

3. सामाजिक परिवर्तन में नेतृत्व

यदि लोकतंत्र के अनुकूल सामाजिक परिवर्तन लाना है तो भारत में शिक्षा प्रत्येक स्तर पर उपयुक्त नेतृत्व करने में सक्षम होनी चाहिए। प्रतिभावान नेता शिक्षा से ही पैदा हो सकते हैं। राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी और अन्य उच्च शिक्षित और प्रबुद्ध भारतीयों ने सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए जागरूक स्तर पर प्रयास किए। हमारे लोगों की व्यापक निरक्षरता, अज्ञानता, खराब स्वास्थ्य और गरीबी से लड़ने और सामाजिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए महात्मा गांधी द्वारा बुनियादी शिक्षा डिजाइन की गई ।

4. लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थिर करना

शिक्षा बेहतर जीवन के प्रति लोकतांत्रिक दृष्टिकोण और मूल्यों को विकसित करने में मदद कर सकता है। स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, न्याय, सहिष्णुता, आपसी सम्मान, भाईचारा और शांति की प्रक्रिया में विश्वास जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों को स्वतंत्र भारत में शिक्षा के माध्यम से स्थिर किया गया है। ये मूल्य सामाजिक परिवर्तन लाने में उपयोगी हैं।

5. संस्कृतियों का संचरण

एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में राष्ट्रीय संस्कृति के संचरण को सुगम बनाने की क्षमता के माध्यम से, यह शिक्षा की एक सतत प्रक्रिया है जो समाज में स्थिरता और निरंतरता प्रदान करती है। यही नहीं शिक्षा ने समाज को आवश्यक और वांछनीय सामाजिक सुधारों को अपनाने के लिए भी तैयार किया है। इस प्रकार शिक्षा सभी सामाजिक परिवर्तन का निर्माता, निर्माता और निदेशक है। संक्षेप में शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के लिए एक शक्ति को मजबूत करने, स्थापित करने और बनाने के लिए एक स्टेबलाइजर है।

6. राष्ट्रीय एकीकरण

राष्ट्रीय एकता लाने में शिक्षा बहुत उपयोगी साबित हो सकती है। जब समाज के विभिन्न समूहों और वर्गों के बीच संघर्ष उत्पन्न होता है तो शिक्षा उन विचारों और भावनाओं की वकालत करके उन संघर्षों को हल करने का प्रयास करती है जो विविधता में एकता लाते हैं और समाज में लोगों के सभी विभिन्न समूहों के एकीकरण को प्राप्त करते हैं। शिक्षा का पवित्र मिशन लोगों को जातिगत

प्रतिद्वंद्विता, सांप्रदायिक झगड़ों, भाषाई संघर्षों और क्षेत्रीय कलहों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीय गौरव के पोषित आदर्शों को प्राप्त करने का प्रयास करना है।

7. राष्ट्रीय विकास

स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और समान अवसर के मूल्यों पर आधारित सामाजिक व्यवस्था बनाने में तेजी से आर्थिक विकास और तकनीकी प्रगति प्राप्त करने में शिक्षा महत्वपूर्ण कारक है। यह अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों के लिए भौतिक और मानव संसाधन विकसित करता है और अंततः समाज और राष्ट्र के विकास में वांछित परिवर्तन लाता है।

निष्कर्ष

शिक्षा सोच, विचारधारा, संस्कृति और अंतःक्रिया में परिवर्तन को प्रभावित करती है और यही समाज को गतिशील, जीवंत और समृद्ध बनाती है। शिक्षा भारत में सामाजिक परिवर्तन के प्रभावशाली साधनों में से एक बन गई है। इसने विकास और परिवर्तन के लिए लोगों की आकांक्षाओं को प्रेरित किया है। इस प्रकार आधुनिक जटिल राष्ट्रीय समाजों में, शिक्षा को न तो सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने वाली एक नियंत्रक शक्ति के रूप में माना जा सकता है, न ही इसे सामाजिक परिवर्तन के एजेंट के रूप में देखा जा सकता है। इसे केवल समाज में अधिक व्यापक शक्ति रखने वाली शक्तियों द्वारा तय किए गए सामाजिक परिवर्तन लाने में एक सहकारी शक्ति के रूप में माना जा सकता है। समाज को सही दिशा में बदलना है, तो शिक्षा प्रणाली पर ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि शिक्षा एक ही समय में सामाजिक परिवर्तन का प्राणी और निर्माता है। शिक्षा को इस तरह से नियोजित किया जाना चाहिए जो समग्र रूप से लोगों की जरूरतों और आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए हो। समाज में शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण योगदान न केवल अपने नागरिकों के जीवन स्तर को ऊपर उठाना है बल्कि उन्हें बेहतर नागरिक बनने में सक्षम बनाना है। इसलिए शिक्षा के बिना समाज आगे नहीं बढ़ सकता है और इसके विपरीत। जैसा कि दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला ने तारामंडल जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में एक संबोधन के दौरान कहा था, "शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।"

संदर्भ :-

1. बाशा चंद पी। सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका। उन्नत शैक्षिक अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 2017;2(5):236-240।
2. चक्रवर्ती एस, चक्रवर्ती बी, दहिया वीएस, तिमाजो एल। शिक्षा तकनीकी विकास की मदद से सामाजिक परिवर्तन और शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया को बढ़ाने के साधन के रूप में। 2017।
3. https://www.researchgate.net/publication/325143953_Education_as_an_instrument_of_social_change_and_enhancing_teaching-learning_process_with_the _help _of _technological_development
4. अग्रवाल एसपी, अग्रवाल जेसी। सामाजिक मुद्दों पर नेहरू कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, भारत, 1989।
5. अग्रवाल ए, अमृता एस एजुकेशन इन इंडिया: चुनौतियां और सामाजिक परिवर्तन लाने में इसकी भूमिका। इंटरडिसिप्लिनरी एंड मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज के इंटरनेशनल जर्नल (आईजेआईएमएस)। 2014;1(10):58-61।
6. बावा बी. भारत में शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन।
7. https://www.yourarticlelibrary.com/education/education-and-social-change-in-india/76837
8. चंद जे. सोशियोलॉजिकल फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन। शिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली, भारत, 2010।
9. मिश्रा एसके। सामाजिक परिवर्तन के कारक के रूप में शिक्षा। प्रबंधन समाजशास्त्र और मानवता के अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान जर्नल। 2014;5(8):8-12
10. पाठक आर.पी. शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य। अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (पी)। लिमिटेड, नई दिल्ली, भारत, 2007।
11. पांडे के.पी. शिक्षा की सामाजिक नींव में परिप्रेक्ष्य। शिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली, भारत, 2010।
12. पाटिल नमिता पी. सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका। इंटरनेशनल एजुकेशनल ई-जर्नल। 2012;1(2):205-2010।
13. राम आहूजा. सोसाइटी इन इंडिया कॉन्सेप्ट्स, थ्योरी एंड रीसेंट ट्रेंड्स नई दिल्ली: पृष्ठ 2005, 215
14. राम आहूजा (2005). भारत में सामाजिक समस्याएं नई दिल्ली। पृष्ठ 1-2

15. श्रीवास्तव टी। सामाजिक परिवर्तन 2016 में शिक्षा की भूमिका।
16. http://www.pioneershiksha.com/news/3085-role-ofeducation-in-social-change.html
17. https://www.sociologyguide.com/education/educationa nd-social-change.php
18. https://www.aresearchguide.com/education-facilitatesocial-change.html
19. https://www.owlgen.in/describe-the-role-of-educationas-an-agent-of-social-change/
20. https://studymoose.com/role-of-education-in-creatingsocial-change-essay
21. https://harrilibrary.blogspot.com/2019/06/educationand-social-development-essay.html